Q No. व्यापार संतुलन (Balance of Trade - BOT) एवं भुगतान संतुलन (Balance of Payments - BOP) में अंतर

अंतरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में व्यापार संतुलन (Balance of Trade) तथा भुगतान संतुलन (Balance of Payments) दो अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। किसी भी देश की आर्थिक स्थिति, विदेशी व्यापार, विदेशी मुद्रा भंडार तथा वैश्विक आर्थिक संबंधों का आकलन करने के लिए इन दोनों का अध्ययन आवश्यक होता है।

व्यापार संतुलन केवल वस्तुओं (Merchandise) के आयात एवं निर्यात के मूल्य के अंतर को दर्शाता है, जबकि भुगतान संतुलन किसी देश और विश्व के अन्य देशों के बीच एक निश्चित अवधि में होने वाले सभी आर्थिक एवं वित्तीय लेन-देन का संपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार व्यापार संतुलन, भुगतान संतुलन का एक भाग है।

व्यापार संतुलन (Balance of Trade)

व्यापार संतुलन से आशय किसी देश के वस्तुओं के कुल निर्यात (Exports) तथा कुल आयात (Imports) के मूल्य के अंतर से है। यदि निर्यात का मूल्य आयात से अधिक हो तो व्यापार संतुलन अनुकूल (Favourable Balance of Trade) कहलाता है तथा यदि आयात का मूल्य निर्यात से अधिक हो तो इसे प्रतिकूल (Unfavourable Balance of Trade) कहा जाता है।

सूत्रः

व्यापार संतुलन = कुल निर्यात – कुल आयात

भुगतान संतुलन (Balance of Payments)

भुगतान संतुलन किसी देश और शेष विश्व के बीच एक निश्चित अवधि में होने वाले सभी आर्थिक लेन-देन का व्यवस्थित लेखा है। इसमें वस्तुओं का व्यापार, सेवाओं का व्यापार, विदेशी निवेश, ऋण, ब्याज, लाभांश, पर्यटन, बीमा, बैंकिंग, विदेशी सहायता तथा प्रवासी भारतीयों द्वारा भेजी गई धनराशि (Remittances) आदि सभी शामिल होते हैं।

भुगतान संतुलन मुख्यतः निम्नलिखित खातों में विभाजित होता है–

- चालू खाता (Current Account)
- पूँजी खाता (Capital Account)
- वित्तीय खाता (Financial Account)
- विदेशी मुद्रा भंडार में परिवर्तन
- व्यापार संतुलन एवं भुगतान संतुलन में अंतर
- अंतर का आधार
- व्यापार संतुलन (BOT)
- भुगतान संतुलन (BOP)

1. अर्थ

वस्तुओं के निर्यात एवं आयात के मूल्य का अंतर।

देश और विदेश के बीच होने वाले सभी आर्थिक लेन-देन का लेखा।

2. क्षेत्र

सीमित, क्योंकि केवल वस्तुओं तक सीमित है।

व्यापक, क्योंकि सभी आर्थिक एवं वित्तीय लेन-देन शामिल हैं।

3. घटक

केवल वस्तुओं का आयात एवं निर्यात।

वस्तुएँ, सेवाएँ, निवेश, ऋण, ब्याज, लाभांश, पर्यटन, बीमा, बैंकिंग, विदेशी सहायता आदि।

4. दृश्य एवं अदृश्य मदें

केवल दृश्य (Visible) मदें।

दृश्य तथा अदृश्य (Invisible) दोनों मदें।

5. प्रकृति

भुगतान संतुलन का एक भाग।

संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय आर्थिक लेन-देन का विवरण।

6. संतुलन की स्थिति

अधिशेष या घाटा हो सकता है।

लेखांकन की दृष्टि से सदैव संतुलित रहता है।

7. उद्देश्य

वस्तुओं के विदेशी व्यापार का आकलन।

देश की समग्र आर्थिक एवं वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन।

8. महत्व

व्यापार नीति निर्धारण में सहायक।

विदेशी मुद्रा, विनिमय दर एवं आर्थिक नीति निर्माण में सहायक।

9. प्रभाव

व्यापारिक प्रदर्शन को दर्शाता है।

समग्र आर्थिक स्थिरता एवं विदेशी भुगतान क्षमता को दर्शाता है।

10. उदाहरण

केवल वस्तुओं के आयात-निर्यात का अंतर।

वस्तुएँ, सेवाएँ, विदेशी निवेश, ऋण, पर्यटन, प्रेषण आदि सभी का समावेश।

व्यापार संतुलन और भुगतान संतुलन का संबंध

व्यापार संतुलन, भुगतान संतुलन का एक महत्वपूर्ण भाग है। यदि किसी देश का व्यापार संतुलन प्रतिकूल (घाटे में) हो, तब भी विदेशी निवेश, सेवाओं से प्राप्त आय, विदेशी सहायता, ऋण तथा प्रवासी नागरिकों द्वारा भेजी गई धनराशि के कारण भुगतान संतुलन संतुलित रह सकता है। इसलिए केवल व्यापार संतुलन देखकर किसी देश की वास्तविक आर्थिक स्थिति का सही आकलन नहीं किया जा सकता।

उदाहरण

मान लीजिए भारत ने एक वर्ष में ₹12 लाख करोड़ का निर्यात तथा ₹15 लाख करोड़ का आयात किया। इस स्थिति में व्यापार संतुलन ₹3 लाख करोड़ के घाटे में होगा। लेकिन यदि उसी वर्ष भारत को विदेशी निवेश, पर्यटन, आईटी सेवाओं के निर्यात, बैंकिंग सेवाओं तथा प्रवासी भारतीयों से पर्याप्त विदेशी मुद्रा प्राप्त हो जाए, तो भुगतान संतुलन संतुलित रह सकता है।

निष्कर्ष

व्यापार संतुलन और भुगतान संतुलन दोनों किसी देश की अंतरराष्ट्रीय आर्थिक स्थिति के महत्वपूर्ण सूचक हैं। व्यापार संतुलन केवल वस्तुओं के आयात-निर्यात की स्थिति बताता है, जबकि भुगतान संतुलन देश के सभी आर्थिक एवं वित्तीय लेन-देन का व्यापक विवरण प्रस्तुत करता है। इसलिए भुगतान संतुलन को किसी देश की आर्थिक स्थिति का अधिक व्यापक एवं विश्वसनीय सूचक माना जाता है।